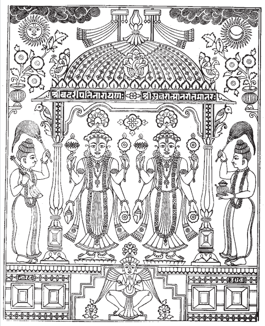

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ | अंक : ६२ | जून-२०१२

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर उन्हीं के आशीर्वचन (सीडनी ओस्ट्रेलिया)	४
४.	पुत्र दाता जेतलपुर के प्रभु	७
५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से...	८
६.	ध्यान का व्यायाम	१०
७.	सत्संगिजीवन का सात्विक ज्ञान	११
८.	सत्संग बालवाटिका	१२
९.	भक्ति सुधा	१४
१०.	सत्संग समाचार	१७

॥ अस्मदीयम् ॥

आज से २५ वर्ष पूर्व अमेरिका में सर्वप्रथम श्री नरनारायणदेव देश अन्तर्गत इन्टरनेशनल श्री स्वामिनारायण ओर्गेनाइजेशन संस्था का न्युजर्सी स्टेट में विहोकन में श्री स्वामिनारायण मंदरि का निर्माण हुआ जिसकी प्रतिष्ठा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज श्री के वरद हाथों वैदिकविधिसे सम्पन्न हुई थी। जो एक भव्य इतिहास तथा सम्प्रदाय के लिये उदाहरण रूप था। भगवान यहाँ पर बिराजमान होने के लिये निश्चित किये हों तभी तो यह सम्भव हो सका। यह मंदिर अपने संप्रदाय तथा I.S.S.O. के लिये ऐतिहासिक घटना है। इस मंदिर की बिल्डींग को न्युजर्सी स्टेट की काउन्सिल ने हेरिटेज में स्थान दिया है। यह गौरव की बात है। न्युजर्सी का मंदिर ऐसे मुहूर्त मे बना हैं कि उसके बाद अनेकों मंदिर बन गये। मंदिर के निर्माण होने से वहाँ पर रहनेवाले भारतीयों की संस्कृति का रक्षण हुआ तथा हिन्दु धर्म की रक्षा हुई। भावी पीढी गलत रास्ते पर जाने से या अन्यत्र भटकने से रुकी और सुरक्षित हो गयी। नये आश्रित मूल संप्रदाय में जुड़े। श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश गादी के साथ जुडते रहे। सभी को इसी में अपना कल्याण दिखाई दिया। प.पू. बड़े महाराजश्री ने यहाँ के लोगों में सत्संग दृढ करने का खूब प्रयत्न किया। इनके विशिष्ट व्यक्तित्व का प्रभाव देश-विदेश के सभी सत्संगियों पर बड़ा। आपके भीतर प्रत्यक्ष श्रीजी महाराज बिराजमान हैं। इसके बाद वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री ने भी सतत प्रयत्न करके देश विदेश में विचरण करके लोगों को आत्मजनीन किया है। जब लालजी के रूप में थे तब से विदेश के युवावर्ग को जागृत रखने के लिये खूब परिश्रम किया-जिसके परिणाम स्वरूप नई परम्परा को नवपल्लवित आधार मिलता गया। अब अपने भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी इतनी छोटी उम्र में विद्याभ्यास के साथ देश विदेश में आनेवाली परम्परा को तैयार कर रहे हैं। अमेरिका में न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती पाटोत्सव में समस्त धर्मकुल उपस्थित रहा। धर्मकुल की उपस्थिति में भव्यातिभव्य उत्सव मनाया गया था। आगे चातुर्मास आ रहा है जिसमें चार महीने लगातार इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का विशेष भजन किया जायेगा। आषाढ वद-१० को भावी आचार्य लालजी महाराज श्री का जन्मोत्सव अहमदाबाद कालूपुर मंदिर में धूमधाम से मनाया जायेगा। समस्त सत्संग को इस प्रसंग का लाभ लेने के लिये अनुरोधहै।

शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण

(महंत स्वा.) श्री स्वामिनारायण मंदिर , कालूपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१२)

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मरतोली पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२. प.भ. घनश्यामभाई चिमनलाल के यहाँ पदार्पण सेटेलाइट।
३. साकोदरा (धोलका देश) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर, वाली (राजस्थान) पदार्पण।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, लाडपुर मूर्तिप्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
६. संत महादीक्षा विधिअपने वरद हाथों से किये।
७. लाडुला (मूणी देश) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।
८. हलवद गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।
९. श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका कथा प्रसंग पर पदार्पण।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर, प्रांतिज १२५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर, सवगढ मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कडा (विसनगर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१३-१४-१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, भुज पदार्पण।
१६. प.भ. मनीषभाई डाह्याभाई के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री भूपेन्द्रभाई के यहाँ पदार्पण पालड़ी।
२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर गुंदीयाला (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२२-२३. माधापर (कच्छ) पदार्पण।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर, मोटी आदरज मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, सुरेन्द्रनगर पदार्पण।
२६-२७. रापर (कच्छ) पदार्पण।
२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजभाई पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२९-५-१२ से १२-६-१२ तक
I.S.S.O. के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर - न्युजर्सी (अमेरिका) रजत जयन्ती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रमकी रूप रेखा

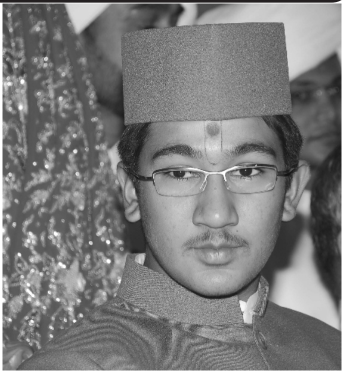

(मई-२०१२)

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर, साकोदरा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, मोटेरा सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर, बापुनगर सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।
९. श्री स्वामिनारायण मंदिर, प्रांतिज वरघोडा प्रसंग पर पदार्पण।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर, नवागाँव पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१२. विसनगर गाँव में सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर, मेमनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२१ मई से ८ जून तक
I.S.S.O. के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर - न्युजर्सी (अमेरिका) रजत जयन्ती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६९ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर उन्हीं के आशीर्वचन (सीडनी ओस्ट्रेलिया)

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा - हीरावाडी - बापुनगर सहयोग : पार्षद कनु भगत

सबसे पहले तो आप लोग हमें शुभेच्छा दिये इसके लिये आप सभी को धन्यवाद । जन्मोत्सव का लाभ यह है कि आज के दिन सन्त-हरिभक्त आशीर्वाद देते है । आज के दिन इतना अधिक आशीर्वाद मिल जाता है कि पूरे वर्ष तक चलता रहता है । मैं जब प्रतिदिन श्री हरि का दर्शन करता हूँ तो अनन्त कोटि के अधिपति के रूप में दर्शन करता हूँ परन्तु जन्म दिन को हमारे दादा है यह मानकर दर्शन करता हूँ । जब मैं छोटा था तब मुझे शिक्षापत्री का श्लोक पढाने मंदिर के एक शास्त्रीजी आते थे । उस समय जब **"नाना देश स्थितान् शिक्षापत्री वृत्तालयस्थित"** श्लोक आया तो मैने पूछा कि नाना देश का क्या अर्थ है ? कौन सा देश ? शास्त्रीजीने बताया कि - अहमदाबाद, मूली, भुज, गढडा, वडताल इत्यादि, तब मैने कहा कि नहीं पंडितजी ऐसा नहीं महाराज सारी दुनिया को ध्यान में रखकर यह बात लिखे हैं । जो आज प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। जब मैं छोटा था तब अहमदाबाद के उत्साही हरिभक्त अपने प्रवचन में एक ही बात कहते कि लालजी महाराज जब बड़े हों तब अमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों में बड़े-बड़े मंदिर हों । उस समय जब मै बैठा रहता तब यह बात सुनकर ऐसा लगता कि मंगल जैसे ग्रहो पर मंदिर बनाने जैसी बात है । परन्तु अपने संकल्प महाराज ने पूरा किया । पूरा कर रहे हैं और आगे करेंगे ।

इस मंदिर की उन्नति, प्रगति देख कर खूब आनंद होता है । लालजी महाराज को बड़ा होते देखकर जो आनंद होता है वह वैसा आनंद इस मंदिर को देखकर होता है । अभी भी इस मंदिर में काम बाकी है । अगल बगल की जितनी जमीन मिल सके लेते रहियेगा । यह मंदिर अपना है, नरनारायणदेव का है । स्वामी ने कथा में कहा कि श्री नरनारायणदेव को महाराजने अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किये थे यह सत्य है । जब महाराजने आनन्दानंद स्वामी को मंदिर निर्माण के लिये कार्य सोंपे तब मंदरि में पैसे नहीं थे । स्वामी ने महाराज से कहा अब क्या करें ? तब महाराज ने कहा जो मंदिर का खात पूजन करवाया है वहीं कलश तक का कार्य पूर्ण करेगा । आप को चिन्ता करने की जरुरत नहीं । इसी तरह सत्संग बढाने और घटाने की चिन्ता तो जो सिंहासन में बिराजमान हैं उन्हें करनी है हमें मात्र प्रयास करना हैं । इसलिये हम सभी एक साथ मिलकर उत्साहपूर्वक कार्य करते रहें ।

यहाँ पर गुजरात से, कच्छ से आकर बसे हुये बहुत सत्संगी हैं । आगे बढते भी रहेंगे । सभी लोग एक संघ में रहकर सत्संग करना ।

हम सभी श्री नरनारायणदेव के हैं । अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव बिराजमान है, भुज में भी श्री हरिने श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है ।

अहमदाबाद तथा भुज के श्री नरनारायणदेव अलग नही हैं । बहुत वर्षो पहले जब मैं आचार्य पद पर था तब भुज के सन्तों ने एक बिन्ती की कि मांडवी के मंदिर का हिसाबी व्यवहार अहमदाबाद से होता है वह दूर है । अतः उसे कच्छ(भुज)में हिसाबी व्यवहार हेतु सौंप दिया जाय। मैंने मंदिर की स्कीम कमेटी में यह प्रस्ताव रख भी दिया और समिति द्वारा प्रस्ताव पारित भी हो गया । लेकिन एक ट्रस्ट की सम्पत्ति दूसरे ट्रस्ट में मिलाना बड़ा कठिन है । इसके लिये चेरिटी कमिश्नर स्वीकृति पत्र दे तभी संभव है। कमिश्नर ने आदेश दे तो दिया लेकिन उसमें एक नोंधलिख दिया – ''आ मंजूरी हूँ एटला माटे आपु छुं कि अहमदाबाद अने भुज बन्ने श्री नरनारायणदेवना मंदिरो छे अने बन्ने ना आचार्य अने धर्मना वडा एकज छे।''

आज संयोग से भुज मंदिर के महंत स्वामी तथा संत यहाँ पर बिराजमान हैं । इसलिये आप सभी श्री नरनारायणदेव के आश्रित होकर एक सूत्र में सत्संग की जियेगा।

अपने सत्संग का विकास हो रहा है मुझे बड़ा आनंद आता है। आज भुज के महंत स्वामी तथा संत उपस्थित हैं। वास्तव में अपने जन्म के दिन अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के दर्शन के अलांवा कहीं भी सेलीब्रेट करने का आदेश नहीं देता। परंतु यह पहलीबार ऐसा हुआ है वह इस लिये कि आप लोग भी तो अपने परिवार के हो । श्री नरनारायणदेव यहाँ बिराजमान है। आचार्य महाराजने कहा कि जाना पड़ेगा तो जाना पड़ेगा।

दूसरी एक हंसने की बात कह देता हूँ। स्वामीने अभी अपनी कथा में कहा कि कथा में सोना नहीं चाहिये । मुझे भी नींद आने लगी थी शरीर है, थकने से नींद आती है या कथा में मानसिक शांति मिलने पर नींद आती है । यह स्वाभाविक है। परंतु महाराज जब गढडा में बिराजमान थे उस समय एक बात कहे जब कथा में कोई सो रहा हो तो अगल-बगल वाले उसे जगा दें। इसके बाद भी नींद आवे तो दंडवत प्रणाम करके कथा में बैठना चाहिये । इसके बाद भी नींद आवे तो दूर जाकर खड़े होकर कथा सुननी चाहिये। इसके बाद भी नींद आवे तो घेला नदी में जाकर नहाँकर आना चाहिये । अन्तिम स्टेप यह है कि पूर्वोक्त नियम से भी नींद आवे तो घर जाकर सो जाना चाहिये।

स्वामीने श्री नरनारायणदेव के २०० वां पाटोत्सव की बात की वह बहुत इम्पोर्टन्ट इवेन्ट्स है । अभी उसमे १० वर्ष बाकी है । १० वर्ष में कितनी प्रगति करेंगे ? अमेरिका में प्रथम मंदिर के समय काफी परेशानी का सामना करना पड़ा था । महाराज की इच्छा रहती है कि मंदिर का काम करना हो तो छोटे से छोटे सत्संगी मंदिर के काम में सहायक बनें। ऐसे मंदिर में अपनापन रहता है । भाव रहता है कि मेरी इसमें कुछ न कुछ तो सेवा है ही । इसलिये यह मेरा है ऐसा आनंद आता है।

महाप्रतापी श्री नरनारायण की बात करें तो श्री हरि का ऐसा वचन है कि हमारे और श्री नरनारायणदेव में लेशमात्र फर्क नहीं है । प्रथम के ४८ वें वचनामृत में महाराज ने कहा है कि सत्संगीमात्र अपनी पूजा में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को रखें । कोई वचनामृत को बदल दे यह अलग बाद है। किसी सत्संगी के लिये भेद की बात महाराजने नहीं कि – वह चाहे अहमदाबाद का हो या वडताल का हो। सभी के लिये समान बात कही है। बल्कि इतना अवश्य कहा कि जो पूजा की मूर्ति है अपूज नहीं रखना। इसके अलावा और भी वचनामृत में उन्होंने कहा कि हममें तथा श्री नरनारायणदेव में कोई फर्क नहीं है अर्थात् मै अपने स्वरुप को सर्वप्रथम अहमदाबाद में प्रतिष्ठित किया हूँ। श्रीजी महाराजने एक और उत्तम बात कही है – कि श्री नरनारायणदेव को छोड़कर अथवा महाराज द्वारा प्रतिष्ठित श्री लक्ष्मीनारायणदेवादि कों को

छोड़कर अन्यत्र आश्रय लेने वाले को कैसा जानना चाहिये तो जिस तरह एक स्त्री अपने पति को छोड़कर परपुरुष के पास जाती है । इसलिये नरनारायणदेव का आश्रय कभी नही छोड़ना हम को कोई पूछता है कि आपकी कोई प्रशंसा करता है तो आपको कैसा लगता है । तब मैं कहता हूँ कि उस समय मंच पर नहीं रहता आपके पास आकर बैठजाता है और मैं सुनने लगता हूँ । यह तो नरनारायण देव गद्दी की प्रशंसा होती है, मेरी नहीं होती । संप्रदाय में ऐसे बहु से सत्संगी है जो आकर कहते हैं, आपका दर्शन आज मैने स्वप्न में किया । हम कहते है कि महाराज ने आपके निश्चय को पक्का करने के लिये दर्शन दिया है।

श्रीजी महाराज की महिमा अन्तर में उतरे और दृढ हो महाराज की आज्ञा का पालन होता रहे ऐसी भावना होनी चाहिये । सत्संग में यदि कहीं अपमान भी सहना हो तो सहलेना चाहिये पर सत्संग से अलग नहीं होना चाहिये । आपको एक उदाहरण देते हैं । अहमदाबाद में घनश्याम महाराज का पाटोत्सव था, यह सभी लोग जानते हैं कि जब कोई पाटोत्सव होता है तो मंदिर के सामने जहाँ कबूतर अनाज चुगते हैं वहीं पर तम्बू बांधा जाता है ! पाटोत्सव के समय ३-४ दिन तक तम्बू रहता है । अब वे कबूतर कहाँ जांय, दाना चुग भी नहीं सकते । मैं विचार कर रहा था कि ३-४ दिन तक कबूतर क्या करते हैं तो देखा कि बिना अन्न-जल के भगवान श्री नरनारायणदेव के मन्दिर पर जाकर बैठते है, जब तम्बू हट जाता है तभी नीचे आकर अन्न चुगते हैं । इससे क्या हमें सीख नहीं मिलती कि कबूतर जैसा पक्षी यदि भगवान का दृढता पूर्वक आश्रय करते हैं, थोड़ा बहुत अड़चन आजाती है तो सहन कर लेते हैं लेकिन अन्यत्र नहीं जाते । इसी तरह हमें भी सत्संग में तकलीफ (व्यवहारिक दृष्टि से) आजाय तो प्रभु का आश्रय नहीं छोड़ना चाहिये । बल्कि श्री नरनारायण देव का आश्रय दृढ करदेना चाहिये ।

भुज का मुम्बई में विश्रान्ति गृह है । ठीक एरपोर्ट के सामने । उस मैं बैठा था । वहाँ से एक दृश्य देखा कि कुत्ता-बिल्ली कौआ, गिलहरी सभी एक ही स्थान पर खा रहे थे । यह आश्चर्य नहीं है तो और क्या ? इसी तरह हमें भी सत्संग में अलग अलग स्वभाव होते हुये भी एक भाव रखना चाहिये । गुणातीतानन्द की बातों में एक बात आती हैं कि जब दुष्काल हो तब सदाव्रत में धक्का मुक्की खाकर भी लोग अन्न लेते हैं, अपमान का विचार नहीं करते । इसी तरह सत्संग में अपमान होने पर भी भाव में परिवर्तन नहीं लायेगे तो निश्चय ही सत्संग बढता रहेगा । सत्संगीमात्र अपने भाई-बहन हैं । सभी में एक भाव आवे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना । जो लोग म्युजियम में सेवाकिये हैं उन्हें खूब धन्यवाद ! म्युजियम के उद्घाटन के समय गुजरात के मुखमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी जब मुख्य हाल में पहुँचे तो कहने लगे कि इसमें हमें कुछ दिव्यता का अनुभव हो रहा है । उन्होंने उस समय सूचन किया कि इसका नाम मौन हाल रखियेगा । म्युजियम में वहेलाल के मचान का एक पीस रखा हुआ है । महाराज का स्मरण करके जो इसके नीचे से निकलेगा उसका कल्याण होगा ऐसा महाराज का वरदान है । हमने सी.एम. का हाथ पकड़कर उसके भीतर से पार किया । म्युजियम के भीतर जो भी प्रसादी की वस्तुयें हैं उनका वर्णन करना कठिन है। हमारे पास जो भी प्रसादी की वस्तुये परम्परा में प्राप्त थी वह सब म्युजियम में रखी हुई है । ५% प्रतिशत हरिभक्तो की है । बड़ी निगरानी के साथ रखरखाव का ध्यान रखा गया है । जो भी इसमें योगदान दिये हैं उन्हे धन्यवाद ।

यहाँ एक बात विशेषरुप से कहना है - प.पू. बड़े महाराजश्री की न्युजीलेन्ड, आस्ट्रेलिया, जैसे देशो की धर्मयात्रा में जो भी दान भेंट प्राप्त हुआ है वह सब श्री स्वामिनारायण म्युजियम के बचत खाते में जमा कर दिया गया है । यही श्री हरि के अपरस्वरुप की उदाहरता है ।

पुत्र दाता जेतलपुर के प्रभु

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

सर्वावतारी भगवान स्वामिनाराण ने अपने हाथों से जेतलपुर धाम में स्वस्वरुप श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज को प्रतिष्ठित किया था । यह स्वरुप आज सत्संगी हो या न हो सभी लोग अपने हृदय में एक भावना रखते हैं कि एक वर्ष तक पूनम को चलकर दर्शन करें तो पुत्र प्राप्ति होती है । इसके साथ ही आधि-व्याधिउपाधिभी नष्ट होती है । अन्य कोई चाहना है तो उसकी भी पूर्ति होती है । व्यवहारिक कोई अडचन आगयी हो, कर्ज हो गया हो, किसी की शरीर में वर्षो से पीड़ा हो, डॉक्टरों ने जिस रोग के लिये मना कर दिया हो, सन्तान न होती हो, बालक बिमार रहता हो, किसी को बोर्ड में अच्छे परिणाम लाने हों, किसी को अच्छी नौकरी चाहिये, किसी को अच्छे कालेज में ऐडमीशन चाहिये, किसी को विदेश का विझा चाहिये, सभी प्रकार की चाहनावाले चाहे वे ज्ञानी हों विज्ञानी हो, त्यागी हो गृही हो, सत्संगी हों, कुसंगी हों सभी जो भी अपने मनमें विचार करके आते है उन सभी की मनोकामना पूरी होती है । प्रतिदिन कोई न कोई चमत्कार देखने में मिलता है । कितने लोग अपने मन में भाव लेकर आते हैं और वे स्वयं उस चमत्कार का अनुभव करते है व्यक्त नहीं करते । प्रतिदिन पाँच जितने बच्चों को मिस्त्री से तौला जाता है । बलदेवजी महाराज ने यह निश्चित कर लिया है कि पाँच पुत्र तो प्रतिदिन देना ही है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. वर्तमान पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री के पास देश मे या विदेश में कोई अपना दुःख व्यक्त करता है तो वे एक ही बात कहते है कि आप अपनी एक वर्ष की मान्यता जेतलपुर बलदेवजी के लिये पैदल प्रति पूनम भरने का संकल्प कर लीजिये पूरा हो जायेगा ।

आज तो प्रतिदिन पूनम को संख्या बढती जा रही है । दो लाख जितने भक्त पूनम को दर्शन करते है । दश हजार जितने लोग पैदल चल कर दर्शनार्थी आते हैं । पूनम की पूर्व रात्रि में भक्तों की भीड़ मंदिर के दरवाजे तक भर जाती है । कितने लोग दंडवत प्रणाम करते आते हैं ।

असंख्य चमत्कारों के साक्षी महंत शास्त्री स्वा. आत्मप्रकाश दासजी तथा पुजारी ब्रह्मचारी पूर्णानंदजी हैं । दुखियों की संख्या उनके पास प्रतिदिन आती है और सुखी होने में परिणत होती है । भगवान स्वामिनारायण अपने भक्तों के सुख के लिये रामानन्द स्वामी से दो वरदान मांगे थे लगता है जेतलपुर में वह संकल्प पूरा करने के लिये बलदेवजी महाराज के रुप मे बिराजमान है । रामानंद स्वामीने जेतलपुर में भूखों को भोजन का सदाव्रत चालू किये थे । श्रीहरि ने जेतलपुर में पुत्र का सदाव्रत चालू किया और आज वह चालू ही है । जिसका लाभ असंख्य लोग ले रहे हैं ।

बलदेवजी की शरण में आया हुआ कोई भी ऐसा नहीं होगा जो निराश होकर वापस गया हो । कितने लोग विदेश में रहते है और दुःख आपत्ति आने पर जेतलपुर बापा का ध्यान करके संकल्प कर लेते हैं और उनका संकल्प पूरा हो जाता है । अभी वर्तमान में यु.एस.ए. में कैद में एक भक्त था बलदेवजी का स्मरण करने से मुक्त हुआ ।

जेतलपुर स्वामिनारायण भगवान को अत्यन्त प्रिय था । जिसे वचनामृत में वृन्दावन के समान बताया गया है । जेतलपुर की गंगा मां श्री हरि को जब बेटा कहती तब वे भोजन करते थे । एकबार उन्होंने कहा कि आप बार-बार बेटा-बेटा कह कर पुकारने के लिये कहते हो तो जो भी बेटा की चाहना करके आवे तो उसे बेटा आप अवश्य देना । श्री हरि ने कहा जो भी जेतलपुर धाम का दर्शन करेगा उसे चारो पुरुषार्थ की प्राप्ति होगी ।

मध्य मंदिर में विराजमान हल-मुशल धारम किये हुये बलदेवजी महाराज के स्वरुप में भगवान स्वामिनारायण स्वयं बिराजमान है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम वस्तु परिचय

उपरोक्त श्री गणपतिजी की मूर्ति श्री स्वामिनारायण भगवान के समकालीन नन्द संत आधारानंद स्वामीने बनाई है । यह मूर्ति श्री हरि द्वारा पूजित है । सामान्य ढंग से श्री गणेशजी की मूर्ति सन्मुख देखने में मिलती है । परन्तु इस मूर्ति की विशेषता यह है कि यह मूर्ति चतुर्भुज है तथा एक चक्षु की है । दफ्ती के उपर वोटर कलर से बनी हुई इस मूर्ति का रंग ऐसा का ऐसा ही है । ऐसा लगता है कि मूर्ति का कलर अभी का है । इस मूर्ति की साइज ४ इंच बाई ३ इंच है । म्युजियम में प्रसादी की वस्तुओं को यथास्थान रखते समय इस मूर्ति को प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्री राजा के हाथों से वोदक्त पूजन के साथ एक विधिहुई थी । यह मूर्ति श्री स्वामिनारायण म्युजियम के १ नं. के होल में रखी गयी है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव के मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई–२०१२)

ता.६-५-१२ कनकभाई गोकलदास पटेल – अहमदाबाद

ता.१३-५-१२ परसोत्तमभाई वालजीभाई पटेल – (गवालावाला)

ता.२०-५-१२ कल्पनाबहन दिनेशकुमार पटेल

ता.२२-५-१२ अ.नि. प्रहलादभाई शंकरलाल मिस्त्री के स्मरणार्थ वती राजेशभाई प्रहलादभाई मिस्त्री–निर्णयनगर–अहमदाबाद

अभिप्राय

मैं यह बताना चाहता हूं कि कितने दिनों से कमर की तथा चलने की तकलीफ थी जिससे कितने डॉक्टरों की दवा की और खड़ा होपाना कठिन था, इसलिये मैने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में बिराजमान श्री रनारायणदेव को भोग लगाने का तथा दर्शन का संकल्प किया। ऐसा चमत्कार हुआ कि डॉ. को भी बड़ा आश्चर्य हो गया और मैं पैदल चलकर म्युजियम में दर्शन करने आई।

(विमलाबहन विनुभाई पटेल – बापुनगर)

म्युजियम अर्थात् श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का अनमोल रत्न यहाँ पर श्री स्वामिनारायण भगवान की साक्षात् दर्शन होता है। पू. बड़े महाराजश्री ने जहाँ पर अपनी अन्तरात्मा को समर्पित किये है ऐसे अनमोल संप्रदाय के हम आश्रित है। इसलिये हमें प.पू. बड़े महाराजश्री का ऋणी रहना चाहिये। जिन्होंने अखिल सम्प्रदाय के लिये अनमोल रत्न भेंट में दिया है।

(शा. हरिगुणस्वामी गु. रघुवीर चरणदास)

यह एक अद्‌भुत प्रयत्न है। मुमुक्षुओं के लिये यह भगवान की स्मृति का अजोड़ उपाय है। चरित्रों की स्मृति के साथ साक्षात्कार हो यह ध्यान रखकर प.पू. बड़े महाराजश्रीने यह अनन्य पुरुषार्थ करके मोक्ष का द्वार खोल दिया है।

(सुरेश के. सुरत)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये मई-२०१२ को प्राप्त दान भेंट की रकम

१,११,१११-००	प्रांतिज श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव का अभिषेक, श्री स्वामिनारायण म्युजियम में अभिषेक।
१,११,०००-००	भालजा साहब मंडल – अहमदाबाद वती नंदलालभाई तथा रमेशभाई दोशी।
८७,०७१-००	श्री स्वामिनारायण मंदिर (सीडनी (I.S.S.O.) आस्ट्रेलिया।
५४,०४७-००	वेस्टर्न सबस मेलबोर्न सत्संगी मंडल प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग पर।
५४,०४७-००	न्यु केस्टल के हरिभक्त कृते–जयेश।
५१,१११-००	छभाडिया जीज्ञेश रवजीभाई (सहजानंद ट्रावेल्स) विवाह प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग (मांडवी) पर।
५०,०००-००	रीमाबहन करशनभाई राघवाडी तथा लक्ष्मणभाई रामजी वेकरिया – लंडन
५०,०००-००	लालजी करशन राबडीया किसुम–आफ्रिका
२०,०००-००	हजुरी पार्षद कनु भगत गुरु श्री वनराज भगत श्री स्वामिनारायण बाग।
१५,०००-००	पटेल पूनमभाई मगनभाई अहमदाबाद
१५००१-००	प.पू. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी – त्यागी आरोग्य केन्द्र कृते कनुभाई।
११,१११-००	श्री भक्तिमंडल – नवागाँव।
११,०००-००	सां.यो. लीरबाई तथा शिष्य मंडल नारणपुर – कच्छ।
११,०००-००	धीरजभाई के पटेल – धरमपुर।
११,०००-००	बाबुलाल कानजीभाई गांडलिया सुरत।
१०,०००-००	पूनमभाई मगनभाई पटेल – अहमदाबाद
१०,०००-००	जगदीशभाई के. दरजी बोपल–अहमदाबाद
५२२२- ००	एन. एच. प्रधानानी – मुम्बई
५१००-००	बाबुभाई भगाभाई पटेल – गांधीनगर
५१००-००	श्रीराम गोशाला – हलवद
५००१-००	निहारिकाबहन नारणभाई दहीसर – कच्छ
५०००-००	डाह्याभाई एन. पटेल तथा विमलाबहन डी. पटेल थलतेज – अहमदाबाद
५,०००-००	सहजानंद मार्बल मांडवी (कच्छ)
५,००१-००	गोपीबहन भुज (कच्छ)
५,०००-००	विद्याबहन रमणलाल पटेल–कुबडथल।
५,०००-००	सोनी पारुल जयेन्द्रकुमार – राणीप।
५,०००-००	अमृतभाई पी. पटेल – बापुनगर।
५,०००-००	कैलाशबहन दशरथभाई अमील गांधीनगर।

ध्यान का व्यायाम

साधु देवस्वरुपदास (जेतलपुर)

भगवान का ध्यान करते समय यदि मूर्ति का हृदय में ध्यान न हो तो भी ध्यान करना चाहिये । कायर होकर ध्यान छोड़ नहीं देना चाहिये । ऐसा जो आग्रह रखता है उस पर भगवान की कृपा होती है ।(ग.प्र.५)

२७३ वचनामृत में सब से छोटा वचनामृत यह है । इसका सबसे बड़ा महत्व है । पद्यपि सभी वचनामृत सोना की खान है । इसमें से कितना कौन निकाल सकता है वह विचारणीय है । इसमें गूढ रहस्य रुपी हीरा पड़ा हुआ है । वचनामृत तो प्राण है - प्राण बिना कौन जी सकता है । इसमें डुबकी लगाने से विचारक्रांति के अहिंसक प्रक्रिया का जन्म होता है । वचनामृत शास्त्र २०० वर्ष पहले लिखा गया है । लेकिन श्रीजी महाराज किस दिन, किस समय, कहाँ बिराजमान थे, कैसा वस्त्र पहने थे, किस दिशा में मुख करके बैठे थे, कौन प्रश्न पूछा था, उसका उत्तर किसने दिया था । ऐसी ऐतिहासिक घटना का कोई शास्त्र अन्यत्र नहीं मिल सकता ।

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनःपुनः
इदमेकं सुनिष्पन्नं, ध्येयो नारायणः सदा ॥

व्यासजी ने सभी शास्त्रों पुराणों का चिंतन करके लिखा कि नारायण ही ध्यान करने के योग्य हैं । भगवद्गीता में भगवान कृष्णने गीता में कहाँ है कि... ''श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाद् ज्ञानाद् ध्यानं विशिष्यते'' ज्ञान की अपेक्षा ध्यान श्रेष्ठ है । गीता में ज्ञान से अधिक ध्यान का महत्व दिया गया है । ध्यान का सीधा संबन्धमन के साथ होता है । मन को वश में करना वायु के वेग को वश में करने जैसी बात है । ध्यान का आधार बनाकर मन को नियंत्रण में किया जा सकता है । मनुष्य मूषक की दौड़ से थक गया है । अब शांति को चाहना है । वचनामृत में महाराजने कहा है कि ध्यान के व्यायाम द्वारा धैर्य पूर्वक सफलता प्राप्त की जा सकती है । यह काम थोड़ा कठिन अवश्य है लेकिन फायदा अधिक है ।

ध्यान के उपर महाराज ने अपने मुख से हित की बात कही है - इन्द्र को ब्रह्महत्या का दोष लगा हुआ था । उसे नारदजी मिले उन्होंने पूछा, हे इन्द्र ! तुम इतने दुबले क्यों हो गये हो ? इन्द्रने कहा जो दुःख मुझे मिला है ऐसा दुःख दूसरे को कभी नहीं आवे । नारदजी ने कहा कि तुम्हे जो दुःख है मुझे कहो, जो मुझे ब्रह्महत्या लगी है, उससे मुझे शांति नहीं मिलती । इन्द्र की बात सुनकर नारदजीने इन्द्र को एक बात बताई कि तूं अपने छोटे भाई वामन को अपने हृदय में धारण करो, यह सुनते ही इन्द्र ने कहा कि नारदजी आप मेरी मजाक उड़ा रहे है । वामन तो छोटा बच्चा जैसे है वह अपना ख्याल नहीं रख सकता तो हमारा क्या ख्याल रखेगा । उसमें भी ब्रह्महत्या जैसे दोष को वह कैसे टालेगा । आप यदि किसी बड़े देव के ध्यान की बात करते तो ठीक था ।

नारदजी नाराज होकर वहाँ से चले गये । ब्रह्महत्या इन्द्र की छाती पर आकर बैठ गई । इन्द्र को ऐसा हुआ कि नारदजी जो बात कह रहे थे वह सत्य थी या मेरी मजाक उड़ाई थी । ऐसा विचार कर आँख बन्द किये और अपने छोटे भाई वामन का ध्यान करने लगे तो ब्रह्म हत्या दूर जली गयी । अब नारदजी के वचन पर इन्द्र को भरोसा हो गया । अपने पास वामन की मूर्ति को रखने लगे । उसी का स्मरण करते रहे जिससे ब्रह्महत्या दूर रहने लगी, उस ध्यान का यह परिणाम निकला कि वामन की मूर्ति सदा उनके हृदय में बिराजमान हो गयी । अब उन्हे नारदजी के वचन में पूरा विश्वास होने लगा । मूर्ति को हृदय में रखने से ब्रह्महत्या का सदा के लिये नाश हो गया ।

इसी तरह अभ्यास करते-करते हृदय में मूर्ति को अखंड रखा जाय तो कारण शरीर का नाश हो जायेगा इसके अलांवा दूसरा कोई उपाय नहीं हैं जो कारण शरीर का नाश कर सके । यदि जीवन में सुख चाहिये तो हृदय में भगवान की मूर्ति को सदा के लिये धारण करना पड़ेगा । इससे सदा के लिये आत्यन्तिकं सुख मिलेगा ।

इस तरह महाराज ने स्पष्ट कहा है कि ध्यान से कर्म अकर्म बन जाता है । ध्यान योग में अभ्यास की आवश्यकता है । ध्यान में निष्फलता ही सफलता का कारण है । निष्फलता कष्ट देनेवाली नहीं है अपितु सुखकारक होती है । इसके लिये निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिये तभी निष्फलता सफलता में परिणत हो जाती है ।

सत्संगिजीवन का सात्विक ज्ञान

पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

''सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्त विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्विकम् ॥''
''सत्यम् शिवम् सुंदरम्.....''

प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के चरणों में कोटि-कोटि वंदन के साथ ''सत्यम् शिवम् सुंदरम्'' अपने सत्संगि जीवन में क्या है ?

धर्मभक्ति मये तात रु माता भये पुत्र श्रीहरि साक्षाता ।
धर्मबंस सुरपूजीत ताते, बंदत सुरमुनि मिलि हरखाते ॥

श्रीहरि जो श्री हरि कृष्ण हैं वे ही परब्रह्म परमात्मा भी हैं जो कोटि ब्रह्मांड का नियमन करते हैं । वचनामृत में श्री हरिने यह बात कही हैं ''पवन की गति, सूर्य का उदय-अस्त, अग्नि की दाहकता शक्ति'' यह सब मेरी इच्छा से होता है । मृत्यु-काल भी अपना काम मेरी इच्छा से करते हैं । ऐसे परब्रह्म परमात्मा का दृढ आश्रय करके निर्भय हो जाना चाहिये । जो भगवान का या धर्मकुल का आश्रित है वह मनुष्य शरीर लेकर भी भगवान के धाम में है । इसलिये आपतकाल में भी भगवान का आश्रय नहीं छोड़ना-चाहिये । संतो के द्रोह से भी भगवान का द्रोह होता हैं यह द्रोह भगवान से सहन नहीं होता । इसलिये सत्पुरुषों का द्रोह कभी नहीं करना चाहिये ।

धर्मबंसी घर आजु कल्याना, तेहि बिना प्रानी भ्रमत भव नाना ।
धर्मबंसी बिना आन उपासे, ता कर जन्म मृत्यु नहि नासे ॥

धर्मवंशी के कुल का जो शरण लिया उसका कल्याण हुआ । इसलिये जो आत्यन्तिक कल्याण चाहते हैं वे धर्मकुल की शरण अवश्य लें ।

सं.गु. निष्कुणानंद स्वामी कहते हैं कि परमात्म तत्व को जानना ही शिवम् है । परमात्मा की स्पर्श की हुई वस्तु सारे ब्रह्मांड में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी । लेकिन अपने संप्रदाय में आश्रितो के लिये प.पू. प्रातः स्मरणीय बड़े महाराजश्री ने श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण किया जिसमे प्रभु की प्रसादी की तथा स्पर्श में लाई गई अनेकों वस्तु रखी गयी हैं - जिसका दर्शन करने से इहलौकिक तथा पारलौकिक दोनो सुख प्राप्त होता है । यह म्युजियम दिव्य म्युजियम है, अलौकिक म्युजियम है । धरती का स्वर्ग है । प्राय इस म्युजियम में जो भी प्रसादी की वस्तु में है वे सभी सत्य हैं - शिव है - सुन्दर हैं । दर्शन के बाद ही इस रहस्य का यथार्थ ज्ञान सम्भव है । सम्प्रदाय के सत्संगियों से भी कुछ प्रसादी की वस्तुयें प्राप्त हुई थी जिन्हे पू. महाराज श्री म्युजियम में लाकर दर्शनार्थ रखा है । किसी एक व्यक्ति को परम्परा में प्राप्त वह वस्तु आज अनेकों के सुख का साधन बनी हैं । सभी लोग त्यागभाव से उन वस्तुओं को सप्रेम भेंट कर दिये । यहाँ आने के बाद मन में इसीलिये परमशांति मिलती है ।

प.पू. बड़े महाराज श्री के विषय में मैं पामर जीव क्या कह सकता हूँ । वे तो अगाधसमुद्र की तरह हैं । प्रभु का अंश उनमें विद्यमान है । उस स्वरुप का स्मरण करने से भी आत्यन्तिक कल्याण होता है । दर्शन ही शिव है ।

''धर्मवंश पुनि हरि कर संता, तिनकर शरन ग्रहत बुधिवंता
सो जानत चतुर परबीना, अपना काज सुधारी लेना ॥''

श्री हरि के सत्संगियो के लिये यही सत्यं शिवम् सुन्दरम् है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सच्ची कमाइ को बचाना जाहिये

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

नदी के किनारे एक सुंदर गाँव था । वहाँ पर सभी ज्ञाति के लोग रहते थे । कुछ खेती करते थे, कुछ व्यापार करते थे, कुछ लोग नौकरी करते थे । इस तरह सभी अपने कर्म मे लगे रहते थे । गाँव में एकता थी । सभी में सद्भाव था । सभी पुरुषार्थी थे । सायंकाल सभी घर आते खाते-पीते कुछ बाते करते बाद में सोजाते । किसी के लप में कोई नहीं रहता था ।

इस गाँव में मनजीभाई का बेटा धनसुख दूसरे की अपेक्षा थोड़ा अधिक पढा था इसलिये इतना सुंदर गाँव भी उसे अच्छा नहीं लगता था । अब वह शहर जाने का विचार करने लगा । धनसुख अपने पिताजी से बात की कि हमें और आगे अभ्यास करना है इसलिये शहर जाना चाहता हूँ । पिताजी ने कहा अपने गाँव में स्कूल-कालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थान है, यहाँ पर अभ्यास करो । शहर में खाने-पीने, रहने की तकलीफ होगी इसके साथ खर्च भी बढेगा । इसलिये शहर में पढने न जाओ तो अच्छा होगा । यहाँ पर जितना पढना हो हम पढ़ायेगे । नहीं पढना हो तो खेती करो - लेकिन शहर का मोह ठीक नहीं । लेकिन धनसुख मन में बैठा लिया था कि पढने शहर जाना है । पिता उसकी टेक देखकर धन की व्यवस्था कर दी और कहा कि देखो शहर का चकाचौंधबड़ा खराब होता है उससे बचकर रहना, मन लगाकर पढना ।

धनसुख शहर में गया, खूब अभ्यास किया, संस्कारी पुत्र था इसलिये अभ्यास के साथ ही नौकरी भी करने लगा जिससे पिताजी को थोड़ा हल्कापन महशूस होने लगा । इसी तरह अभ्यास पूर्ण कर लिया । संयोगवश उसे अच्छी वेतनवाली नौकरी दूसरे शहर में मिल रही थी इसलिये वहाँ चला गया । वहाँ पर पाँच-सात वर्ष कमाया । धनसुख ने अच्छी बचत भी की । अब उसे अपने माता-पिता भाई की याद आई । वहाँ जाने के लिये अपने शेठ से छुट्टी भी लेली । बाजार से सभी के लिये यथायोग्य सामान देने के लिये खरीद लिया । अपने मन में विचार करने लगा कि गाँव मे जाकर सभी से अथ से इति तक इतने बड़े वेतन तक कैसे पहुँचा वह सब बताऊँगा ।

उस जमाने में वाहन व्यवहार की सुविधा आज जैसी नहीं थी । अर्थात् बैलगाड़ी पर बैठ कर जाना होता था या तो पैदल चलकर जाना होता था । रास्ते में लूटपाट का भी डर रहता था । अपने परीश्रम की कमाई को बड़े जतन से रखा थे । बड़े थैले में पोटली बाँधकर रखा और हाथ खर्च के लिये कुछ बाहर रखा था । उस जमाने में १ रुपया की भी कीमत थी । १ रुपया का चिल्लर करवाया ।

रास्ते में रात आवे तो कहीं अच्छी जगह पर रुक जाता और खाने के लिये १० आना देता । इस तरह चलते-जलते छ-सात गाँव आया और रात्रि विश्राम करके दिन में चलकर अपने गाँव के नजदीक वाले गाँव तक पहुँचा ही था कि उसे याद आया कि पहले वाले गाँव में जहाँ पर रुका था उनके पास मेरा दो आना रह गया है वह मेरी कमाई का है उसे ले आता हूँ । इधर सूर्यास्त होने जा रहा था इसलिये चोरी की डर से अपनी कमाई की पोटली थी एक वृक्ष के नीचे खड्ढा खोदकर वहाँ दबाकर रख देता है इस विचार से अभी जब लौटेंगे तो यहाँ से यह पोटली ले लेगे । पीछे वाले गाँव में जाता है और दो आने वापस ले आता है - लेकिन वापस आकर देखता है तो सात वर्ष की कमाई जो गड्ढे में गाड़कर गया था कोई निकाल ले गया । अब पछताने के सिवाय कोई रास्ता नहीं था । दो आने के चक्कर में अपनी पूरी कमाई गंवा दी । उसे विश्वास था कि गाँव के नजदीक आ गया हूँ दो आना क्यों जाने दूं और थोडा लेट से भी घर पहुँच जायेंगे । लेकिन सबकुछ चला गया । चेहरा उदास घर पहुँचा ।

मित्रो ! आपको ऐसा नहीं लगता कि दो आने के लिये सारी अनमोल जिंदगी को गंवा देते हैं । अमूल्य मनुष्य अवतार हमें श्री हरीने दिया । भजन भक्ति, सत्कर्म छोड़कर लोभ-मोह व्यसन-काम क्रोधादिक दो आने वाली चीच के पीछे दौड़ रहे हैं । संत समागम-भजन भक्ति यह अनमोल खजाना हैं । इस बात को ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है -

''कोड़ी बदले गाफल कुबुद्धि, राम रतन धन खोयुंजी''

यह मनुष्य अवतार श्री हरि की कृपा से मिला है । इसलिये संत समागम-भजन-भक्ति करलेना चाहिये । श्री हरिने जो मार्ग दिखाया है जो उपदेश दिया है, जो सत्संग दिया है वही सच्ची कमाई है । इसे यदि सम्हालकर रखेंगे तो हम सभी की धनसुखकी स्थिति नहीं होगी ।

भवसागर तरने का सरल उपाय

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

रावण के साथ युद्ध करने के लिये श्री राम की वानरसेना समुद्र पर पुल बाँधती है। राम का नाम लेते जाते और बड़े-बड़े पत्थर उठाकर समुद्र में फेंक देते। देखते देखते ही पुल का काम पूरा हो गया। यह वानर सेना राम की सेवा समझकर रात दिन काम में लगी रही।

इधर रावण की नगरी में चर्चा होने लगी। बात रावण-मन्दोदरी तक पहुँची। राम की सेना युद्ध के लिये समुद्र पर पत्थर से पुल बना दिया वह भी राम का नाम लेकर पत्थर समुद्र में डालते वे तैरने लगते।

यह बात सुनकर मन्दोदरी ने रावण से कहा कि देखे आप राम का नाम लेने से पत्थर तैरते हैं। आप के नाम से कोई तरा ? रावण ने कहा, मन्दोदरी ! तुम्हे खबर नहीं मैं भी पत्थर तैरा सकता हूँ ! आप एक पत्थर का टुकड़ा भी तैरा दीचिये तो भी बहुत। रावण ने कहा चलो अभी तुम्हे दिखाता हूँ। रावण और मन्दोदरी दोनो समुद्र के किनारे गये। अब रावण संकोच करने लगा। मेरी इज्जत का सवाल है। यदि मैं पत्थर डालूं न तरा तो ? मंदोदरी ने कहा पतिदेव आप क्या विचार कर रहे हैं। डालिये पत्थर रावण एक छोटा सा पत्थर लिया। समुद्र की जल राशी को देखकर विचार करता है कि मेरे नाम से पत्थर तो नहीं तरेगा, इसलिये मन में राम का नाम लेकर पत्थर डालता है और पत्थर तैरने लगता है। यह देखकर मन्दोदरी आनन्द में आ जाती है और जोर-जोर से चिल्लाने लगती है कि मेरे पति के नाम से भी पत्थर तैरता है। मैं कल ढिढोरा पिटवाऊँगी कि मेरे पति के नाम से भी पत्थर तैरता है।

रावण अब फंसा। मंदोदरी को कहता है इसमें जल्दी करने की क्या बात है। नहीं, नहीं राक्षस राज ! अब यह बात छिपानेलायक तो है नहीं। जब राम के नाम से पत्थर तैर गये तो हम यह कह सकती हैं कि रावण के नाम से भी पत्थर तैर गये। रावण बिचार करने लगा कि कल प्रजा मेरे नाम से पत्थर डालेगी और पत्थर तैरेगा नहीं तो मेरी नामूसी होगी। इसलिये सत्य कह देना ठीक रहेगा। रावण मन्दोदरी को पास बुलाकर कहता है कि देखिए मैं पत्थर राम का नाम लेकर समुद्र में डाला था। इसलिये तैरने लगा। मन्दोदरीने कहा कि मैं यह जानती थी। आपके नाम से तो नाव भी डूब सकती है, पत्थर क्या चीज है।

यह बात सुग्रीव के गुप्तचर जान गये। अरे, रावण भी राम का नाम लेकर पत्थर डालने लगा है। गुप्तचर आकर प्रभु राम से कहते हैं हे प्रभु ! आपका नाम लेकर रावण भी पत्थर तैराने लगा है।

अब प्रभु की चिन्ता बढ गयी। यह क्या हो रहा है समझ में नहीं आता। मेरे नाम का पुल बाँधा जा रहा है। मेरे नाम का पत्थर रावण भी तैरा रहा है। भगवान श्री राम की नींद उड़ गई वे विचार करने लगे कि मैं पत्थर डालूं तो तैरेगा या नहीं। यह विचार कर अर्ध रात्रि में सभी के सोजाने पर मुझे कोई देख न ले इस तरह समुद्र के किनारे जाते है और एक छोटासा टुकडा समुद्र में डालते हैं वह पानी में गिरते ही डूब जाता है। उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है कि मेरे नाम से समुद्र के ऊपर बड़े-बड़े पत्थर से पुल तैरने लगा लेकिन मैने स्वयं पत्थर डाला तो वह पत्थर डूब गया। वे अपने मन में विचार करते है कि मै यह क्रिया जो की है वह किसेने देखा तो नहीं?

खड़े होकर देखते हैं तो पीछे हनुमानजी खड़े हैं। हनुमानजी प्रभु का पैर पकड़ कर कहते हैं कि आपने यह क्या किया ? आप का मुख क्यों शरमाया हुआ है ?

हे हनुमान ! मेरे नाम से बड़े-बड़े पत्थर तैर रहे हैं। पुल बाँधा जा रहा है और मैने छोटा सा टुकड़ा डाला तो वह भी डूब गया। यह क्यों हुआ ? हनुमानजी कहते हैं, हे प्रभु ? इसमें चिन्ता का क्या विषय। आप जिसे छोड़ देंगे वह किसीकाल में भी नहीं तैर (पार) हो सकता। राम नाम लेकर ही तरा जा सकता है। अब राम प्रभु उसे छोड़ देंगे तो वह डूब जायेगा न ? प्रभु ! आपका स्वभाव जीव मात्र का हाथ पकडने का है, पकड़कर पारकरने का है। जब आप छोडदेंगे तो उसे कौन तार सकता है ?

कितनी सुंदर बात है। यदि इस संसार सागर से पार होना हो तो अर्थात् डूबना न हो तो जैसा निष्कुलानन्द स्वामीने लिखा है वैसा करना चाहिये-

पार उतार्या परिश्रम विना, बेसी नाम रुपी नाव,
जे जने जप्या जीभथी, ते तरी गया भव दरियाव।

भगवान का नाम स्मरण ही भवसागर पार होने का एक मात्र सरल साधन है। भगवान का ऐसा दृढ आश्रय रखना चाहिये कि भगवान अपने को कभी न छोड़े। यदि ऐसा किया गया तो निश्चित ही जीवन को सफल समझना चाहिये।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "हमे अपने ऊपर दया करना है"

(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

जीवात्मा परमात्मा का अंश है । परमात्मा अंशी है । जब अंशी से अंश अलग होता है तो अंशी को अर्थात् परमात्मा को कोई फर्क नहीं पडता । जिस तरह समुद्र में से एक बूंद पानी लेने से समुद्र को कोई फर्क नहीं होता ठीक इसी तरह समुद्र परमात्मा है जीवात्मा परमात्मा का अंश है तो उसे बन्धन क्यों लगता है ? सभी जीवों को बन्धन नहीं लगता । जो अनादि मुक्त हैं उन्हें बन्धन नहीं होता । बन्धन किसे होता है ? तो मन, अहंकार को होता है । बन्धन क्यों होता है ? तो अज्ञान के कारण होता है । अज्ञान का क्या मतलब ? यथार्थ ज्ञान के अभाव में अज्ञान होता है । इस संसार में क्या सार है ? और क्या असार है ? जिस तरह सिकारी बन्दर को पकड़ने के लिये घड़े में चना रखते है और बन्दर घड़े में से चना लेने के लिये हाथ डालते है और फंसा जाते है । वे मुठ्ठी में चना भरकर बाहर निकालते हैं तब हाथ बाहर नहीं आता, चना छोड़ दें तो हाथ बाहर आजाय । उन्हें ऐसा होता है कि घडे में कोई है जो मेरे हाथ को पकड़ रखा है । यही अज्ञान है । बन्धन ही मोह है । जीवात्मा का भी ऐसा ही है । संसार यह घड़ा है और चना संसार का विषय सुख है । मन बन्दर है ।

इसीलिये शास्त्रों में मन को बन्दर की उपमा दी गयी है । बन्दर जिस तरह घड़े के चने को लेना चाहता है और पकड़ लेने पर छोड़ता नहीं है ठीक इसी तरह मनुष्य विषय सुख पकडने के लिये दौड़ता है और संसार में फंस जाता है । जीवात्मा को बन्धन नहीं होता लेकिन माया मन को बांधलेती है । विषय सुख इतना अच्छा लगता है कि उसे छोड़ना भी नहीं है और मुक्ति भी चाहिये । यदि मुक्ति चाहिये तो मुठ्ठी खोलनी पडेगी । देह संसार है उसके साथ मन को विषय में आसक्त मत होने दो । अनासक्त भाव से संसार में रहना चाहिये । मन को कुसंग का रस जल्दी लगता है । इसलिये मन को सत्संग में लगाये रखना चाहिये । बालक जब छोटा होता है तो निष्कपट होता है जब वह बड़ा होता है संसार की तरफ दृष्टि जाती है तो वही सब कुछ देखता है और करता है । जीव को प्रारब्धके अनुसार धन-दौलत सुख मिलता है । परंतु परमात्मा जब जीवात्मा पर प्रसन्न होता है तब क्या देता है ? तो सच्चे संत का संग देता है । परमात्मा की कृपा होने पर ही जीवात्मा को सत्संग मिलता है । हम सभी के ऊपर परमात्मा की खूब कृपा है कि मनुष्य शरीर प्राप्त हुई उसमें भी सत्संग मिला है अब प्रयत्न करके ध्येय की प्राप्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति के लिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये । जिस तरह किसी वर्तन में बालू भरकर फिर उसमें पत्थर डाले तो पत्थर नहीं जायेगा । यदि पहले से पत्थर डालकर रेती डाले तो दोनो रह सकता है । इसी तरह जीवन खाली वर्तन की तरह है । बालू मायिक पदार्थ की तरह है । पत्थर सिद्धान्त की तरह है । यदि आप सिद्धान्त पक्ष लेकर चलेंगे तो भी वहां मायिक पदार्थ तो

आनेवाले ही हैं । वे बालू की तरह भीतर आ जायेंगे । परंतु यदि सिद्धान्त निश्चित नहीं कर सकेंगे और मायिक (रेती की तरह) जीवन जीयेगे तो ध्येय प्राप्ति सम्भव नहीं होगी । इसलिये सिद्धान्त पक्ष रखकर ध्येय प्राप्ति का लक्ष्य रखकर आगे बढेगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी अन्दर से जो निर्णय होगा तो अन्तरात्मा आपको वारंवार यथार्थता का अनुभव कराती रहेगी । और लक्ष्य प्राप्ति में मदद मिलेगी । परमात्मा की कृपा के बिना यह सरल भी नहीं है । आत्मबल रखकर, दृढभावपूर्वक, निष्ठापूर्वक आप लोग परमात्मा की तरफ आगे बढे यह श्री नरनारायणदेव के चर्णों में प्रार्थना ।

स्वामी श्री सहजानंद

(सां.यो. कंचनबा - ध्रांगध्रा)

जय श्री स्वामिनारायण, हम विगत अंक में प्रभु के बालपन से नीलकंठवर्णी तक चरित्र देखे अब आगे देखते हैं -

जब धर्म पर आक्रमण होता है अधर्म का प्रकोप बढता है । अमानवीय कृत्य होने लगता है, अहिंसा, अनाचार, दुराचार, पापाचार, भ्रष्टाचार की सीमा भी टूट जाती है तब प्रभु का आगमन होता है । ठीक इसी समय प्रभु नीलकंठ वर्णी के रुप में भारत देश की यात्रा करके धर्म की सच्ची सीख देते हुये गुजरात की धराधाम पर लोज गाँव पधारे - उस समय यहाँ पर रामानन्द स्वामी का वह स्थानक था । नीलकंठवर्णी लोज गाँव के बाहर एक तालाब के किनारे बिराजमान थे । उसी सयम मुक्तानंद स्वामी के शिष्य सुखानंदजी से भेंट हुई । उन्होंने पूछा आप कहाँ से आ रहे है और कहाँ जायेगे ? यहाँ सुनकर वर्णी ने कहा ब्रह्मपुर से आ रहे हैं और ब्रह्मपुर जाना हैं जो वहाँ लेजाय वही हमारे माँ-बाप हैं । सुखानंद तो यह सुनकर खूब प्रसन्न हो गये । उन्हे मुक्तानंद स्वामी के पास ले गये वहाँ पर प्रभु का तथा मुक्तानंद स्वामी का अटूट प्रेम बंधगया ।

रामानंद स्वामी उस समय कच्छ में थे । लेकिन मुक्तानंद स्वामी से उनके विषय में सुनकर मिलने की तीव्र इच्छा हुई । इसलिये स्वयं प्रभुने तथा मुक्तानंद स्वामीने लोज पधारने की बिन्ती करके पत्र लिखा । पत्र मिलते ही सभा में रामानन्द स्वामी कहने लगे कि जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था वे अब आगये हैं । प्रजा जिस अवतार की चाहना कर रही थी वे स्वयं लोज पधारे हुये हैं । पत्र के उत्तर में रामानन्द स्वामीने लिखा कि यदि मोक्ष की चाहना हो तो स्तम्भ को गले लगाकर रहना होगा तथा में मुक्तानन्द स्वामी की आज्ञा में रहना होगा । उसके साथ ही अपने शरीर की रक्षा भी लोकहित के लिये आवश्यक है ।

गुरु की आज्ञा शिरोमान्य समझकर मुक्तानन्द स्वामी की आज्ञा में रामानन्द स्वामी का पत्र आने से पहले ही रहने लगे । उन्होंने स्त्री पुरुष की एक साथ सभा को अलग करवाया । त्यागियों को अष्टांग ब्रह्मचर्य का नियम दिलवाया । त्यागियों को स्त्री का दर्शन नहीं करना चाहिये ऐसी शिक्षा दी । यह बात प्रारंभ में सभी को ठीक नहीं लगी फिर भी दोनो की धर्म रक्षा इसी में है ऐसा समझाकर धर्मशास्त्र का नियम बताया । इस तरह इस उद्धव सम्प्रदाय में नीलकंठ वर्णी द्वारा यह नियम शुद्धता को ध्यान में रखकर उचित भी था । इस नियम से संप्रदाय को एक लाभ और हुआ । वह यह कि स्त्रियों के लिये भी सारे अलग नियम किये गये और उनकी रख-रखाव की

व्यवस्था तथा सभा इत्यादि की व्यवस्था अलग की गयी । कथा भी स्त्रियों को करना रहा जिससे निरक्षरता भी जली गयी । इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों के उन्नति के मार्ग खुल गये ।

साधु भी नीलकंठ की बात मानने लगे । शंका का स्थान न रहा । उसी बीच रामानंद स्वामी पिपलाणा गाँव में आने के बाद पत्र लिखकर मुक्तानंद स्वामी के साथ नीलकंठवर्णी को वहीं पर बुला लिये । दोनो एक दूसरे को मिलकर आत्मतृप्ति का अनुभव किये ।

निः स्वार्थ तथा निष्कामभक्ति

(सां.यो. कुंदनबा गुरु कंचनबा-मेडा)

शास्त्र में नवधा भक्ति की बात कहीं गयी है।

श्रवणं कीर्तन विष्णोः स्मरणं पादं सेवनम् ।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यं आत्मनिवेदनम् ।।

नव प्रकार की भक्ति को उत्तम बताया गया है । फिरभी जिसे जिसमें आनंद मिलता हो वह भक्ति कर सकता है । लेकिन ध्यान रखना चाहिये कि भक्ति में कोई स्वार्थ न हो । भक्ति सकाम भी नहीं करनी चाहिये । ईर्ष्या के भाव से भक्ति नहीं करनी चाहिये ।

एक लाख का चेक हो तो उसका पूरा पैसा मिलेगा लेकिन उस चेक को अज्ञानता से काट दिया जाय तो १ पैसा भी नहीं मिलेगा । इसी तरह हम भक्ति तो बहुत अच्छी करते हैं लेकिन स्वार्थयुक्त करें तो उसका फल एक पैसा भी नहीं मिलेगा । निःस्वार्थ भक्ति का फल बताया गया है।

एक जिस तरह इलायची, केशर, बदाम, पिस्ता डालकर खीर बनाई गयी हो लेकिन उसमे चीनी के बदले नमक डाल दिया जाय तो वह किसी काम की नहीं । उसे कोई खायेगा भी नहीं । खीर की तरह यदि भक्ति करते है तो भी ईर्ष्या उसमें आजाय तो किसी काम की नहीं । इर्ष्या के साथ की गयी भजन से भगवान प्रसन्न नहीं होते । निष्कुणानंद स्वामी ने भक्तिनिधिग्रंथ में लिखा है कि-

भक्ति करता भगवान नी आवी अहं ममत नी आड ।
प्रभु पासण पोंचता आडुं दीधुं ए लोह कमाड ।।

हे भक्तो ! भक्ति करते समय अहं-ममत्व का भाव न आजाय इसका सदा ध्यान रखना चाहिये । मैं सबसे बड़ा हूँ, मेरी सब से अच्छी कथा होती है, मेरी पुस्तक कोई बांच नहीं सकता, मेरे जैसा कोई होशियार नहीं है मेरे जैसा कोई दानवीर नहीं है इत्यादि प्रकार से जो अभिमान करता है वहाँ भक्ति टिकती नहीं है।

श्रीजी महाराज ग.प्र. ५६ वचनामृत में कहते हैं कि ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति में जैसे जैसे अहंकार आता जाता है भक्तिन्यून होती जाती है।

सकाम भक्ति सहु करे छे, नथी करता निष्काम कोय ।
तेमां नवनीत नथी निसरतुं नित्य वलोवतां तोय ।।

लाखो वर्ष तक पानी का मंथन करने पर भी मक्खन नहीं निकल सकता । सकाम भक्ति भी ऐसी है । निष्काम भक्ति दूधके मंथन जैसी है । सकाम भक्ति से गमनागमन का फेरा टलेगा नहीं । भगवान का धाम नहीं मिलेगा । इसलिये आत्मकल्याण के लिये भक्ति करनी चाहिये । भक्ति करने से भगवान प्रसन्न होंगे और अक्षरधाम की प्राप्ति होगी । जगत के मायिक सुख के लिये भक्ति करेंगे तो एक दिन अवश्य दुःखी होना पड़ेगा । इसलिये भगवान की निष्काम भक्ति सभी में सदा वनी रहे ऐसी प.पू.अ.सौ. गादीवाला के चरणों में प्रार्थना करें कि श्री हरि के चरणों का आश्रय सदा बना रहे।

सत्संग समाचार

अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणादि देवोका चन्दन चर्चित दर्शन

अहमदाबाद के श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज तथा अक्षर भुवन में घनश्याम महाराज को सुन्दर सुशीतल सुगंन्धित मलयागिरि चन्दन का लेपन करके भक्तों को दर्शन कराया जाता है। वैशाख शुक्ल-३ अक्षयतृतीया से ज्येष्ठ शुक्ल १५ तक ऐसा अलौकिक दर्शन करके लाखों भक्त धन्यता का अनुभव करते है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री प.पू. अ.सौ. गादीवालाजी प.पू. बड़ी गादीवालाजी यह दिव्य दर्शन करके अत्यन्त प्रसन्न होती है। समग्र आयोजन पूज्य महन्त स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ब्र. पुजारी राजेश्वरानन्द जी, पार्षद घनश्याम भगत, श्री लाभशंकरभाई, ब्र. जगदीशानन्द, ब्र. अपूर्वानन्द, ब्र. मुकुन्दानन्द, श्री घनश्याम महाराज के पुजारी स्वामी परमेश्वरदासजी इत्यादि संत मंडल ने ठाकुरजी को चन्दन से अलंकृत करके भक्तो को दर्शन का लाभ दिया था। (नारायणमुनि स्वामी)

बापुनगर में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराज के आशीर्वाद से तथा भावि आचार्य लालजी महाराज के पावन सानिध्य में ता.७-५-१२ को बापुनगर कर्मशक्ति पार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया था।

पू. स्वामी नारायणघाट के प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित बाल महोत्सव में बापुनगर के ४९० बालकोंने भाग लिया था। प्रात: ९-०० बजे से ही बालको ने स्वेच्छया प्रवृत्ति प्रस्तुत की थी।

इस प्रसंग पर प.पू. बाल लालजी महाराज श्री संत मंडल के साथ पधारे थे। जिस में स्वा. लक्ष्मण जीवनदास, हरिकृष्ण स्वामी विश्वस्वरुप स्वामी तथा नारायणमुनि स्वामी आदि संत मंडल पधारे थे। बालकों द्वारा नाटक, रास, स्पीच, आदि कार्यक्रम प.पू. लालजी महाराज के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी बालकों को भोजन करवाया गया था। समग्र आयोजन चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।

(श्री नरनारायद्मण युवक मंडल - बापुनगर)

बापुनगर में द्वितीय पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराज के आशीर्वाद से तथा भावि आचार्य लालजी महाराज के पावन सानिध्य में ता.७-५-१२ को बापुनगर कर्मशक्ति पार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया था।

पू. स्वामी नारायणघाट की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित बाल महोत्सव में बापुनगर के ४९० बालकों ने भाग लिया था। प्रात: ९-०० बजे से ही बालको ने स्वेच्छया प्रवृत्ति की थी।

इस प्रसंग पर प.पू. बाल लालजी महाराज श्री संत मंडल के साथ पधारेथे। जिसमें स्वा. लक्ष्मण जीवन दास, हरिकृष्ण स्वामी विश्वस्वरुप स्वामी तथा नारायणमुनी स्वामी आदि संत मंडल पधारा था। बालकों द्वारा नाटक, रास, स्पीच आदि कार्यक्रम प.पू. लालजी महाराज के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी बालकों को भोजन करवाया गया था। समग्र आयोजन चैतन्य स्वरुप दास जीने किया था।

(श्री नरनारायण युवक मंडल - बापुनगर)

मोटेरा में प्रथम बाल महोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में श्री हरि के चरणों से पावन मोटेरा गाँव मे ता.६-५-१२ को सायंकाल प्रथम बाल महोत्सव का आयोजन किया गया था।

स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तम प्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायण युवक मंडल मोटेरा द्वारा आयोजित बाल महोत्सव में मोटेरा के ७ जितने बालक एकत्रित हुए थे। जिसमें आउट डोर गेम इन्डोर गेम, सुन्दर नाटक, रास, वचनामृत कंठस्थ जैसे अनेकों कार्यक्रम किये गये थे। इस कार्यक्रम से प्रसन्न होकर बालकों को लालजी महाराज ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय का प्रोत्साहन इनाम दिया था।

इस प्रसंग पर स्वा. विश्वस्वरुप दासजी, नारायण मुनि स्वामीने प्रेरक प्रवचन किया था। अन्त में लालजी महाराज ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभी आयोजन स्वा. चैतन्य स्वरुपदास जीने किया किया था।

(श्री नरनारायण युवक मंडल - मोटेरा)

कोटेश्वर गुरुकुल में तृतीय बाल सत्संग शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराज श्री की आज्ञा से प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराज की अध्यक्षता में स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाश दासजी की प्रेरणा से सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर में ता.२७-४-१२ से ता.२९-४-१२ तक तीन दिन का ''बाल सत्संग शिबिर'' का आयोजन किया गया था।

सत्संग शिबिर के प्रथम दिन प्रातः ८-०० बजे से गाँवों से करीब ३५० बालक उपस्थित हुये थे। प्रातः लालजी महाराज श्री संत मंडल के साथ पधारकर दीप प्रागट्य करके सभी शिबिरार्थियों को शुभेच्छा दिये थे। बालकों में संस्कार सिंचन, मूल संप्रदाय का यथार्थ ज्ञान हो इसलिये यह शिबिर किया गया था। प्रथम सत्र में ''शिबिर का हेतु तथा फायदा'' विषय पर प.भ. नारायणभाई (बावला) ने प्रवचन किया था। सायंकाल के सत्र में ''पूजा तथा कंठी'' की अनिवार्यता पर स्वामी रामकृष्णदासजीने ज्ञानोपदेश किया था।

द्वितीय दिन प्रथम सत्र में ''श्री नरनारायण देव एवं नव धामों का इतिहास'' के ऊपर स्वा. विश्वस्वरुपजीने प्रवचन किया था। धर्मकुल महिमा तथा संत महिमा पर प.भ. धनाभाई साहब प्रवचन किये थे।

अन्तिम सत्र में आज का बालक या युवान के विषय पर स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजीने प्रवचन किया था। इस शिबिर में करीब नये ९०० शिबिरार्थी महिमा जानकर कंठी धारण किये और पूजा की पेटी ले गये। अन्य और भी नये बालकों को कंठी धारण कराई गयी थी। सतत तीन दिन तक बालकों ने संत तथा लालजी महाराजश्री के साथ आनंद प्राप्त किया था। सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था।

बालकों को उत्साहित करने के लिये प्रथम सत्र में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री पधारे थे। साथ में कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, नारायण घाट के महंत स्वामी, प.पू. राजेश्वरानंदजी, को जे. के. स्वामी, मुनि स्वामी आदि संत पधारे थे। प.पू. आचार्य महाराज श्री बालकों पर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। पूर्णाहुति के दिन लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में नूतन बाल सत्संग के स्थापना की बात की थी। समाप्ति के समय बहुत बडी संख्या में अभिभावक उपस्थित हुये थे। इस तरह यह तीसरा बाल सत्संग शिबिर सम्पन्न हुआ था।

इस प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर की सेवा तथा अन्य हरिभक्तों की तन, मन, धन की सेवा सराहनीय थी। इस शिबिर का संचालन स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजीने किया था। (सहजानंद गुरुकुल - कोटेश्वर)

३१ गाँवों में सत्संग शिबिर का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से गवाडा गाँव के मंदिर का ३१ वर्ष पूर्ण होते ही माणसा तथा वीजापुर के अगल बगल के ३१ गाँवों में सत्संग शिबिर का आयोजन किया था। इस गवाडा गाँव को भगवान की चरण रज ने पावन किया था। यहाँ पर श्री नरनारायणदेव के निष्ठावाले सत्संगी हैं। २० प्रतिशत भक्त सीटी में रहते हैं। यहा के हरिभक्तों को संतो का नियम, निश्चय, पक्ष, दृढता के साथ मिला हुआ है। आगामी ता.१६-२-१२ को ३१ वां वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। जिसमें श्री राम के आश्रित ऐसे १०० भक्त भाग ले रहे हैं। इस उपलक्ष्य में प्रथम सभा में ता.२२-४-१२ शनिवार रात्रि गवाडा गाँव में स्वा. चैतन्य स्वरुप दासजी तथा शा. कुंजबिहारी दासजीने सुन्दर कथा का लाभ दिया था।

द्वितीय सभा ता.२८-४-१२ शनिवार रात्रि खणुंसा गाँव मे हुई थी जिसमें स्वा. विश्वस्वरुप दासीजीने कथा किया था।

तीसरी सभा ता.५-५-१२ शनिवार रात्रि में स्वा. गोपालजीवनदासजीने तथा शा. चैतन्यस्वरुप दासजीने कथा का लाभ दिया था। चौथी सभा ता.१२-५-१२ शनिवार रात्रि पुंधरा गाँव में स्वा. नारायण वल्लभ दासजी तथा स्वा. देवप्रकाशदासजीने लाभ दिया था था। पांचवी सभा त.१९-५-१२ शनिवार रात्रि में आहजोल गाँव में हुई थी। जिसमें स्वा. रामकृष्णदासजी स्वा. चैतन्य स्वरुपदासजी, स्वा. कुंजबिहारी दासजी, स्वा. पी.पी. स्वामीजी पधारकर भक्तों को सत्संग का लाभ दिये थे।

(इसके बाद की सभा का समय बाद में बताया जायेगा)

(रमेशभाई कोठारी)

बनाशकांठा के थरा गाँव में श्रीमद् सत्संगिजीवन का पंचदिनात्मक पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से एवं स्वा. जे.पी. स्वा. नारायणमुनि के मार्गदर्शन से बनासकांठा के थरा गाँव में विश्व कानाबार परिवार की कुलदेवी बालवी माताजी के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता.२२-४-१२ से २६-४-१२ तक स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स्वा. विश्वबिहारीदासजी के वक्तापद

पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण धूमधामसे सम्पन्न किया गया था । यह प्रसंग विरडी गीरवाला श्री नटुभाई कानाबार की देखरेख में सम्पन्न हुआ था । ता.२४-४-१२ को प.पू. बड़े महाराज श्री पधारे थे । पू. महाराजश्रीने पूरे कानाबार परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । श्री नटुभाई कानाबार श्री स्वामिनारायण भगवान के सर्वोपरि उपासक है - ऐसा कहकर उनकी प्रशंसा की थी ।

ता.२६-४-१२ को अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पधारे थे उन्होंने नटुभाई कानाबार तथा रमेशभाई कानाबार को शाल ओढाकर सन्मान किया था । थरा में बालवी माताजी का मंदिर कानाबार परिवार से जाना जाता है । इस मंदिर का अभिषेक ता.२६-४-१२ को प्रातः ७-०० बजे शास्त्रोक्तविधिसे किया गया था । श्री नरनारायण देव देश का भाभर में दियोदर रोड़ पर पेट्रोल पंप के बगल में श्री स्वामिनारायण मंदिर बनाने के लिये श्री नरभेरामभाई मोतीरामभाई कानाबार स्वयं सामने से आकर प.पू. आचार्य महाराजश्री से निवेदन किया । इसलिये यहाँ पर भव्यातिभव्य मंदिर का निर्माण होगा । इस मंदिर से लाखों जीवों का कल्याण होगा । यहाँ के थरा, भाभर, दियोदर इत्यादि स्थानों पर रहने वाले बनासकांठा के कानाबार परिवार के भावुक भक्त एकत्रित होकर कथा का लाभ लिये थे ।

बनासकांठा में सत्संग सभाओं का अधो निर्दिष्ट आयोजन हुआ था

वैशाख शुक्ल-७ दियोदर, २५०० हरिभक्त । वैशाख शुक्ल-९ वढियार लालोडा गाँव में, ५०० हरि भक्त । भाभर, थरा, डीसा इत्यादि गाँवों में श्री नटुभाई कानाबार द्वारा सभाओं का आयोजन किया गया था । इससे सत्संग का विस्तार होगा तथा मूल संप्रदाय के दोनो देशो की व्यवस्था समझाई जायेगी । श्री नटुभाई गाँव-गाँव घूमकर सत्संग का प्रचार करते है । डीसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ७०० हरिभक्त सभा में भाग लिये थे । थरा बालवी माताजी के मंदिर में श्री नरभेरामभाई कानाभार के यजमान पद पर सभा हुई थी । धर्मकुल की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

(रमेशभाई नरभेरामभाई कानाबार - भाभर)

थरा कथा प्रसंग में आजीवन सदस्य बने

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जे. पी. स्वामी की प्रेरणा से थरा गाँव के पारायण प्रसंग पर प.भ. रमेशभाई नरभेरामभाई कानाबार द्वारा करीब २० लोग श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन ग्राहक बने है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाँव (कपडवंज) का द्वितीय पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आत्मप्रकाश दासजी तथा मंदिर के निर्माण कर्ता प.पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से तथा स्वा. ज्ञानप्रकाशदासजी (श्री रंगमहल घनश्याम महाराज के पुजारी) के मार्गदर्शन में ता.१०-५-१२ गुरुवार को नवागाँव श्री स्वामिनारायण मंदिर का दूसरा पाटोत्सव भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों सम्पन्न हुआ । जिसके यजमान प.भ. विनयभाई चिमनलाल पटेल, दक्षाबहन विनुभाई, श्री जयेशभाई चिमनभाई पटेल, रीटाबहन जयेश पटेल परिवार थे । इस प्रसंग पर भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी थी । ठाकुरजी का अभिषेक, महापूजा प.पू. लालजी महाराज के हाथों से किया गया था ।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू. लालजी महाराज का पूजन-अर्चन किया था ।

शा.स्वा. हरिॐ स्वामीने महंत के.पी. स्वामीने ब्र.स्वा. पूर्णानन्दजी ने तथा विश्वप्रकाशदासजीने इस प्रसंग पर उद्बोधन किया था । अन्त में समस्त सभा को प.पू. लालजी महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

(शा. भक्तिनंदन दासजी - जेतलपुर)

नारणपुरा मंदिर से जेतलपुर धाम तक पूनम को पदयात्रा

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा से शा.स्वा हरिॐ प्रकाशदासजी के मार्दगर्शन एवं प्रेरणा से वैशाख शुक्ल-१५ को जेतलपुर तक की भव्य पैदलयात्रा निकाली गयी थी । इस यात्रा में करीब ५०० जितने हरि भक्त भाग लिये थे । जगह-जगह पर जूस पीने की व्यवस्था की गयी थी । नारणपुरा केम्प में पदयात्रियों के लिये आईस्क्रीम का प्रसाद दिया गया था । प्रत्येक पदयात्री बलदेवजी महाराज का दर्शन करके धन्य हो गये । इस यात्रा में जेतलपुर नवागढ के प्रेमस्वरुप स्वामी भी जुड़े थे ।

(घनश्यामभाई पटेल - उवारसदा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

यहाँ के मंदिर में प.पू. ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के पू. शास्त्री स्वा. पुरुषोत्तम प्रकाशदासजी तथा पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से जेतलपुर से कथा करने के लिये शा.स्वा. उत्तम प्रियदासजी तथा शा.स्वा. भक्तिनन्दनदासजी कालीयाणा पधारे थे । यहाँ पर श्री नरनारायण युवक मंडल को नई

प्रेरणा देकर जाग्रत किया है। जिससे प्रत्येक एकादशी को मंदिर में रात्रि को धुन की जाती है। सामाजिक प्रवृत्ति में केन्सर सोसायटी के सहयोग से रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया था। जिसमें ६९ जितने रक्तदाता रक्तदान करके उदाहरण रुप बने थे। प्रत्येक रक्तदाता को भेंट में एक बेग दी गयी थी। (अरजणभाई मोरी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायण मंदिर के जीर्णोद्धार के लिये श्रीमद् भागवत रात्रि पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री के आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर का जीर्णोद्धार का काम प्रारंभ हो गया है। प.पू. बड़े महाराज श्री की आज्ञा से गवैया स्वामी केशवदासजीने स्थापत्य कला के आधार पर मंदिर का निर्माण करवाया था। परंतु प्रदक्षिणा करते समय बरसात तथा गर्मी में तकलीफ होती थी। इसका ध्यान रखकर पू. महाराजश्रीने दोनो महंत को शिल्पशास्त्र के आधार पर कार्य करने का आदेश दे दिया। इस कार्य के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगि जीवन कथा का पारायण रखा गया जिसके वक्ता शा.स्वा. रामकृष्ण दासजी थे। कथा ता.२२-४-१२ से ता.२८-४-१२ तक चली। जिसमें नारायणघाट, राणीप, न्यु राणीप, नवा वाडज, शाहीबाग, तथा घाटलोडिया के सत्संगी आयोजन में जुड़े रहे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री इस प्रसंग पर पधार कर खूब प्रसन्न हुए और सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये। सभी मंदिरों के संत पधारे हुये थे। जीर्णोद्धार के लिये काफी हरीभक्तों ने सेवा की थी।

(शा. दिव्य प्रकाश दासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा का ५५ वां पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. भंडारी स्वामी जानकी वल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा का ५५वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस उपलक्ष्य में ता.९-४-१२ से ता.१४-४-१२ तक श्रीमद् सत्संगी जीवन पंचान्ह पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री ता.१४-४-१२ को पूर्णाहुति प्रसंग पर पधारकर अभिषेक-आरती अपने हाथों से किये थे। प्रासंगिक सभा में अनेक मंदिरो से संत पधार कर उद्बोधन किये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसी के साथ युवक मंडल को महीने में एक दिन सभा करने की आज्ञा की थी।

मंदिरों से पधारे हुये संतो में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, शा. नारायण वल्लभ स्वामी (वडनगर), स्वा. कृष्ण वल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर) स्वा. जगतप्रकाशदासजी, बलदेव स्वामी (धोलेरा) मुकुन्दस्वामी, विश्वप्रकाश स्वामी, श्रीजी स्वरुप स्वामी, श्रीरंग स्वामी, सी.पी. स्वामी, नंदकिशोर स्वामी, धोलेरा के पी.पी. स्वामी इत्यादि संत पधारे थे। सभा संचालन स्वा. वासुदेव चरणदासजीने किया था। श्री नरनारायण देव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनों को दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ देने सां.यो. बहनों के साथ पधारी थी।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - प्रांतिज रजत शताब्दी महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा गवैया स्वामी की प्रेरणा से तथा प्रांतीज मंदिर के महंत स्वामी एवं ट्रस्टी मंडल तथा हरीभक्तो के तन-मन-धन के सहयोग से प्रांतीज मंदिर में बिराजमान श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज तथा श्री राधाकृष्णदेव का १२५वां पाटोत्सव वैशाख कृष्ण-५ को प.पू. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तम प्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के मार्ददर्शन में धूमधाम से मनाया गया।

इस उपलक्ष्य में सत्संगि जीवन पारायण स्वा. घनश्याम प्रकाश दासजी अपनी सुमधुर शैली में किया था। इसके साथ १२५ कुंडो से श्री विष्णुयाग भी धीरेनभाई के. भट्ट के आचार्यत्व पर सम्पन्न हुआ था।

समग्र उत्सव में स्वा. माधवप्रसादजी खूब उत्तम सेवा करके उत्सव को सफल बनाया था। सां.यो. बहनोने ५१ घन्टे तक धुन महिलाओं से करवाया था।

प्रथम दिन पारायण के यजमान श्री हसमुख भावसार थे। इन्हीं के निवास स्थान से भव्य पोथी यात्रा निकाली गयी थी। बाद में भक्तिनगर कथा स्थल पर पहुंची थी।

दूसरे दिन प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारकर बहनों को दर्शन एवं आशीर्वाद का सुख प्रदान किया था। तीसरे दिन प्रातः काल प.पू. बड़े महाराज श्री संत मंडल के

साथ पधारे थे । सभा में इस उत्सव कमेटी की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये प.पू. बड़े महाराज को १,११,१११-०० रुपये की भेंट दी गयी थी । चौथे दिन समस्त सत्संग के प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे उनके स्वागत में राजमार्ग के उपर धून-कीर्तन भजन-रास-गर्बा करते हुये सभी लोक कथा स्थल पर पहुंचे । वहाँ सभा में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

वैशाख वद-५ पूर्णाहुति के समय प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । वहाँ पर मंदिर में वेद विधिसे षोडशोपचार पूजन के साथ अभिषेक किया गया था । बाद में महिलाओं के मंदिर में आरती उतारकर प.पू. महाराजश्री ने नारियल का हवन करके कथा में कथा की भी पूर्णाहुति करके वहाँ पर सभी भक्त समुदाय को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प्रातः १०-०० बजे प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री बहनों को आशीर्वाद का सुख प्रदान करने के लिये पधारी थी । सभा का संचालन शा. हरिजीवन दासजीने किया था । (को. हरिभाई मोदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर में ता.८-४-१२ रविवार को १०० रविवार की सभा पूर्ण होने पर उत्सव मनाया गया था ।

इस उपलक्ष्य में प्रातः ५ बजे से ५-४५ तक पूरे गाँव में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन करते हुये प्रभात फेरी की गयी थी । सायंकाल ४ से ५-३० तक धुन, ५-३० से बलुंग फलाइंग द्वारा श्रीजी महाराज को पत्र भेजा गया था । रात्रि में ८-३० से ९-३० तक रवि सभा, ९-३० से ११ बजे तक मंदिर की प्रगति के विषय में चर्चा, सत्संग गोष्ठी इत्यादि ग्रामजनो के साथ की गयी थी । इस प्रसंग पर पूरे गाँव में बुंदी का प्रसाद दिया गया था । समग्र कार्यक्रम श्री नरनारायण युवक मंडल के सहयोग से किया गया था ।

(प्रकाशभाई बी. गज्जर, पियूषभाई बारोट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर - माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा वयोवृद्ध संत जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से माणसा मंदिर का १४२ वां वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था ।

प्रासंगिक सभा में कथा एवं पाटोत्सव के यजमान श्री मणीलाल मगनलाल लुवागत परिवारने प.पू. आचार्य महाराज का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

जेतलपुर धाम से पू. पी.पी. स्वामी, स्वा. जगतप्रकाश दासजीने सत्संग की महिमा समझाई थी । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में शा. घनश्याम प्रकाश दासजी के वक्तापद पर पाँच दिन का भागवत रात्रि पारायण रखा गया था । अन्तिम दिन पाटोत्सव के यजमान की तरफ से सभी को भोजन कराया गया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर से श्याम स्वामी, अहमदाबाद से जे. के. स्वामी, विष्णु स्वामी, जे.पी. स्वामी, बालु स्वामी, भरत भगत पधारे थे । (श्री न.ना.यु.म. तथा चन्द्रप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से खोडा गांव के मंदिर का १४ वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर ठाकुरजी का भव्य अन्नकूट गाँव के हरिभक्तों द्वारा किया गया था । रात्रि के समय कथा का लाभ देने के लिये माणसा के महंत स्वा. घनश्याम प्रकाशदासजी पधारे थे । गवैया संत चन्द्रप्रकाश स्वामीने कीर्तन भजन का लाभ दिया था । इस प्रसंग पर आणंद से जे. डी. ठक्कर तथा रमेशभाई भी आये थे । (साधु चन्द्रप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार का ७वां पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराज श्री की आज्ञा से तथा यहां के महंत स्वा. आनंदजीवन दासजी की प्रेरणा से तथा को स्वा हरिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में हरिद्वार मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का ७वां पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिसके यजमान अमृतभाई गोविंदभाई कानदास पटेल थे । इस उपलक्ष्य में ता.४-५-१२ से ता.६-५-१२ तक श्रीमद् भागवत दशमस्कन्धका आयोजन

किया गया था । जिसके वक्ता शा.स्वा. सत्यप्रकाश दासजी (मूली) थे । पोथीयात्रा जलयात्रा इत्यादि निकाली गई थी । वैशाख शुक्ल-१५ ता.६-५-१२ को घनश्याम महाराज का षोडशोपचार पूजन, अभिषेक, अन्नकूट किया गया था । शा. वासुदेव चरणदासजी पधारकर यजमान परीवार को आशीर्वाद दिये थे । (को. हरिप्रकाशदासजी)

प.पू. लालजी महाराज श्री के वरद हाथों से वहेलाल गाँव के द्वार का उद्घाटन

भगवान स्वामीनारायण की प्रसाद की तीर्थ भूमि गाँव वहेलाल में ग्राम पंचायत के द्वारा श्रीहरि की पत्थर की मूर्ति के साथ नूतन भव्य प्रवेशद्वार का निर्माण किया गया जिसमें मंदिर के महंत स्वामी तथा गाँव के हरीभक्तों के निवेदन पर प.पू. लालजी महाराज ता.२२-४-१२ रविवार सायंकाल ५-०० बजे पहुंच कर द्वार का अनावरण किये । इसके यजमान श्री हेमलभाई रावजीभाई पटेल थे । प.पू. लालजी महाराज ने मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर साथ में संतो के साथ सभा में बिराजमान होकर सभी को दिव्य आशीर्वचन का सुख प्रदान किये थे । सभा के बाद पू. लालजी महाराज श्री रमेशभाई पटेल के घर पदार्पण करने गये थे ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

हर्षद कालोनी (बापुनगर) बहनों के नूतन मंदिर का द्वितीय वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री दासभाई, सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (बापुनगर) के आयोजन से मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । उत्सव के अन्तर्गत ता.१५-५-१२ से ता.१९-५-१२ तक धीरजाख्यान का रात्रि पारायण किया गया था । जिस पारायण को शा. स्वा. रामकृष्ण दासजीने किया था । कार्यक्रम में पोथीयात्रा, बालकों द्वारा नाटक, समूह महापूजा, ठाकुरजी का अन्नकुट दर्शन इत्यादि किया गया था । इस प्रसंग पर कालुपुर से स्वा. हरिकृष्ण दासजी ब्र. राजेश्वरानंदजी, श्रेय मंदिर के महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी इत्यादि संत पधारे हुये थे ।

बहनों को दिव्य दर्शन का लाभ देने हेतु अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । सभी कार्यक्रम प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों संपन्न हुआ था । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

उत्सव के यजमान श्री रमेशभाई अंबालाल पटेल, पारायण के यजमान श्री परसोत्तमभाई रुडाभाई सोहागिया थे । अन्य सभी भक्तों का अलौकिक लाभ मिला था । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पू. पी. पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से राबडीया (पंचमहाल) नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-९ ता.३०-४-१२ को पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपु) ब्र. पूर्णानन्दजी शा.स्वा. हरिॐ प्रकाश दासजी वि.पी. स्वामी (कलोल) इत्यादि संतो के सहयोग से सम्पन्न हुआ था । श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक, अन्नकुट सत्संग सभा का सुन्दर आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर अगल-बगल के गाँव के हरिभक्त पधारकर दर्शन का तथा कथा का सुंदर लाभ लिये थे । (को. हरिकृष्णभाई राबडीया)

मेराई के मुवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) तथा पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से मेराई के मुवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ता.४-५-१२ को पू. पी.पी. स्वामी तथा पू. श्याम स्वामी के वरद हाथों से संपन्न हुआ । जिसमें अभिषेक, अन्नकुट आरती इत्यादि कार्य हुये थे । पू. पी.पी. स्वामीने कथा का रसपान कराया था । पाटोत्सव के यजमान श्री प्रवीणचन्द्र ओच्छवलाल काछिया का पू. पी.पी. स्वामीने प्रसादी का पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया था ।

(चिमनभाई पटेल - भातवाला)

मूलीप्रदेश का सत्संग समाचार

श्री राम गौशाला के लाभार्थ हलवद में श्रीमद् भागवत सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. पी.पी. स्वामी

(जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से श्रीराम गोसेवा ट्रस्ट हलवद के उपक्रम पर ता.२-५-१२ से ता.८-५-१२ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह का पारायण स्वा. रामकृष्णदास के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ था ।

इस प्रसंग पर ता.४-५-१२ को प.पू.अ.सौ. बड़ी गादी वालाजी बहनों के आमंत्रण पर उन्हे दर्शन - आशीर्वाद का सुख प्रदान करने के लिये पधारी थी । ता.५-५- १२ को प.पू. बड़े महाराज श्री पधारे थे । सभा में पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुये कहा कि गोरक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है । अलग-अलग के बड़े-बड़े धार्मिक, राजकीय, उद्योगपति तथा सेवाभावी संस्था के कार्यकर्ता तथा विश्वहिन्दु परिषद के राष्ट्रिय कार्यकर्ता श्री प्रवीणभाई तोगडीया तथा बजरंग दल के सेवक भी इस पर उपस्थित थे ।

ता.७-५-१२ को प.पू.अ.सौ. गादीवाला सां.यो. बहनों के साथ पधार कर बहनों को आशीर्वाद दर्शन का लाभ दिया था । ता.२-५-१२ को पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराज श्री संतो के साथ पधारे थे । महाराजश्रीने अपने प्रवचन में हिन्दुस्तान के प्रत्येक नागरिक का धर्म है कि वे गौरक्षण करें इस तरह भार दिया था । इस प्रसंग का सभा संचालन स्वा. चैतन्य स्वरुप दासजी कर रहे थे । हलवद श्री नरनारायण युवक मंडल तथा हरिभक्त एवं अन्य समाज सेवी संस्था के लोग इस कार्यक्रम में सहयोग दिये थे । (श्री न.ना.पु.म. -हलवद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लदुडा पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के पूर्व महंत स्वा. नारायण प्रसाद दासजी की प्रेरणा से यहाँ के बहनों के मंदिर का ११ वां पाटोत्सव ता.७-५-१२ को मनाया गया था ।

इस उपलक्ष्य में सां.यो. लाभुबा के यजमान पद पर श्रीमद् भागवत पंचाहन पारायण यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) के वक्तापद पर ता.३-५-१२ से ता.७-५-१२ तक जिया गया था ।

ता.७-५-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय भव्य उत्सव के साथ स्वागत किया गया था । प.पू. महाराजश्री के हाथो अभिषेक, अन्नकूट आरती की गयी । बाद में कथा की पूर्णाहुति करके सभा में बिराजमान हुये थे । स्वा. नारायण प्रसादजीने मांगलिक उद्‌बोधन किया था । बाद में सेवाभावी भक्तों का सन्मान किया गया था । प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था समग्र आयोजन स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर)ने किया था । स्वा. आत्मप्रकाशदास, स्वा. आनन्दस्वरुप, स्वा. निर्भयजीवनदास सुंदर सेवा का कार्य किया था । आगन्तुक संतोने आशीर्वाद का लाभ दिया था । सभी आये हुये भोजन का प्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे ।

(शा. स्वा. आत्मप्रकाशदास-सायला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बांकानेर मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से सां.यो. कमला बा, कोकिला बा, उषा बा, की प्रेरणा से बहनो के स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता.२९-३-१२ से ता.२-४-१२ तक श्रीमद् सत्संगि भूषण पारायण श्रीजीप्रकाश स्वामी के वक्तापद पर हुई थी । अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये थे । ता.२-४-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी की प्रतिष्ठा विधिकी गयी थी । कथा की पूर्णाहुति करके प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस कार्यक्रम की यजमान जयाबा तथा विजया बा थी । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवाला बहनों को आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी । समग्र आयोजन मूली मंदिर के महंत तथा सुरेन्द्रनगर के कोठारी स्वामीने किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

रतनपर मंदिर का ८वां पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा वयोवृद्ध संत स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से तथा कालु भगत के मार्गदर्शन में यहाँ के हरिभक्तों के सहयोग से मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव ता.४-५-१२ को सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर वचनामृत की कथा सुव्रतदास स्वामी ने की थी । इसके साथ महापूजा भी की गयी थी । इस प्रसंग पर मूली तथा सुरेन्द्रनगर के सन्त पधारे थे । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में प.पू. बड़े महाराज श्री का जन्मोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनिया के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराज के तसवीर का पूजन अर्चन किया गया था । यहाँ के महंत स्वामी ने यजमान का पुष्पहार से सन्मान किया था । युवा हरिभक्तों ने नन्द संतो द्वारा रचित कीर्तन गाकर सभी को

आनंदित किये थे । महंत स्वामी ज्ञानप्रकाश दासजीने धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । प.पू. बड़े महाराजश्री ने म्युजियम निर्माण कार्य करके सभी के मन को मोह लिया है । इस अवसर पर भक्तों ने सुन्दर केक बनाकर पू. महंत स्वामी के हाथों कटवाकर महाराज के सामने रखकर बाद में सभी प्रसाद लेकर बिदा हुये थे ।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हयुस्टन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी के दिन १-४-१२ रविवार को दोपहर १२-०० बजे रामजन्मोत्सव तथा रात्रि में १०-०० बजे श्री घनश्याम महाराज का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

६- अप्रैल शुक्रवार को श्री हनुमान जयंती - अन्नकुट आदि का उत्सव मनाया गया था ।

पू. बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव भी धूमधाम से मनाया गया था । यहाँ के महंत स्वा. धर्मकिशोर दासजी भगवान की भजन का सुंदर सुयोग करते रहते है ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है । (हयुस्टन मंदिर प्रमुखश्री)

वोशिंग्टन डी. सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर २१ अप्रैल शनिवार को सायंकाल ५ बजे से ९ बजे तक इल्करीझ के चर्च में सत्संग सभा हुई थी । जिसमे भजन-कीर्तन वचनामृत वांचन, रामनवमी के निमित्त, प.पू. बड़े महाराज के जन्मोत्सव के निमित्त पूजन-अर्चन करके ठाकुरजी की आरती करके प्रसाद लेकर बिदा हुए थे ।

(कनुभाई पटेल)

गत मई-२०१२ का संशोधन

सम्प्रदाय के गौरव में प.भ. भुपेशभाई परमार के सुपुत्र के बदले सुपुत्र श्री सेलत परमार सस्टेने बलजीयो पोलिमर कांक्रिट विषय पर संशोधन एवं रिसर्च किया है । इस तरह सुधार कर पढना है ।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

भाउपुरा : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. लालजीभाई गणेशभाई पटेल के भाई प.भ. रामभाई गणेशभाई पटेल ता. १-५-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

अहमदाबाद (साबरमती) : प.भ. लालजीभाई शंकरभाई पटेल की धर्मपत्नी अ.सौ. सूरजबहन लालभाई पटेल ता. २२-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुये हैं ।

विसतपुरा (कडी) : श्री कनुभाई तथा कीर्तिभाई के पिताजी प.भ. ओधवजीभाई जेरामभाई पटेल ता. २८-१-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

धांगध्रा : प.भ. प्रेमजीभाई भलाभाई दलवाडी (उ. ७५ वर्ष) ता. २८-१-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

कलोल (देलवाड़ा) : श्री स्वामिनारायण मासिक के प्रतिनिधितथा श्री नरनारायणदेव एवं धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. मणीभाई (खांडवाला) के छोटेभाई प.भ. ईश्वरभाई जीवरामदास पटेल (उ. ७२ वर्ष) ता.२९-४-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं ।

धांगध्रा : प.भ. जतीनभाई ठक्कर (लालाभाई) के माताजी रंजनबेन ता. २३-५-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।